IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 2, December 2022

संस्कृत सगुणोपासक कवियों के आकलन में योगेश्वर श्रीकृष्ण

डॉ. प्रतीक द्विवेदी

प्राध्यापक

श्री वैदिकादर्श स्ना. सं. म. विद्यालय, सरयूवाग, अध्योध्या

शोध सारांश : योगेश्वर श्रीकृष्ण की अमर गाथा श्रीमद्भगवत् गीता के रूप में युगों–युगों तक एक विशिष्ट महात्म्य की ओर अग्रसर रहते हुए समाज को नई दिशा व दशा का साक्षात्कार कराती रहेगी। स्वयं श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवत गीता में सम्पूर्ण वेदों के सार को समाहित करते हुए जीवन को जीवन्त बनाने की कला को निरूपित कर दिया गया है। इसकी गुणवत्ता को देखते हुए मैंने संस्कृत सगुणोपासक कवियों के आकलन में योगेश्वर श्रीकृष्ण शीर्षक से इस आलेख को महिमा मण्डित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में निम्नबिन्दुओं को ध्यान में रखकर अनुसरण किया है, ये बिन्दु है– प्रस्तावना, विषय परिचय, विषय–विस्तार, उपयोगिता एवं उपसंहार।

प्रस्तावना के अंतर्गत योगेश्वर श्रीकृष्ण की महत्ता के संबंध में महर्षि वेदव्यास जी द्वारा महाभारत में नायक के रूप में जगह–जगह सांख्य योग एवं धर्मान्तर्गत कार्यों का साकार विग्रह के रूप में वर्णन किया गया है। विषय परिचय के अंतर्गत योग के सम्बन्ध में श्रीमद्भगवत गीता ही सर्वश्रेष्ठ द्वार है, इसकी महत्ता को भारत ही नहीं अपितु विश्व के कई देशों में ग्राह्य है। विषय विस्तार के अंतर्गत योगेश्वर श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन सविस्तार श्रीमद्भगवत गीता के अनेक उदाहरणों से पुष्टित एवं पल्लवित किया गया है।

उपयोगिता के अंतर्गत भगवान श्रीकृष्ण का अवतार लोक ग्राही सद्गुणों जैसे–अर्जुन से मित्रता का निर्वहन, प्रेम के साकार विग्रह, बन्धु–बान्धव स्नेह, स्वयं के अवतार की महत्ता एवं श्रीमद्भगवत गीता में उपदेशों के द्वारा सभी समस्याओं के निराकरण का मार्ग है। उपसंहार के अंतर्गत श्रीकृष्ण ही सर्वश्रेष्ठ योगगुरु, मार्गदर्शक, साधक, कर्मक्षेत्र, धर्मक्षेत्र, आध्यात्मिकता एवं व्यावहारिकता के अनुपम भण्डार है। इसलिए संस्कृत सगुणों पासक कवियों के आकलन में योगेश्वर श्रीकृष्ण शीर्षक लोक ग्राह्य प्रमाणन सिद्ध हो सकेगा।

मुख्य शब्दः संस्कृत, सगुणोपासक, कवि, आकलन, योगेश्वर, श्रीकृष्ण, महाभारत, धर्मान्तर्गत, श्रीमद्भगवत, बन्धु, बान्धव, स्नेह, आदि।

प्रस्तावना :

संस्कृत वाङ्मय में दो ऐसे मूर्धन्य महाकवि है, जिनकी रचनायें उपजीव्य काव्य के नाम से विख्यात है। इन महाकवियों के नाम हैं–महर्षि वाल्मीकि एवं भगवान वादरायण व्यास (कृष्ण द्वैपायन) महर्षि वाल्मीकि की

Copyright to IJARSCT

रचना से रामाख्यान तथा व्यासजी की रचना से कृष्णाख्यान की अजस्र धारा प्रवाहित हुई है। इस धारा में परवर्ती कवियों ने डुबकी लगाते हुए रामाख्यान एवं कृष्णाख्यान को विवर्धित–संवर्धित किया है। दोनों ही महाकवियों के नायक भगवान विष्णु के अवतार है। महाकवि कालिदास ने जहां विष्णु के अवतार श्रीराम चन्द्र जी के वंश का वर्णन करते हुए रघुवंश महाकाव्य तथा अन्य दो रचनाओं के साथ अकेले ही संस्कृत वाङ्मय की लघुययी में स्थान अर्जित किया है वहीं महाकवि माघ ने शिशुपालवध महाकाव्य में कृष्ण चरित का वर्णन करते हुए संस्कृत वाङ्मय की वृहत्रयी में द्वितीय स्थान पर प्रतिष्ठित है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण भारतवर्ष की महानतम विभूतियों में से एक थे। उनका जीवन मनुष्य मात्र के लिए प्रेरणा स्रोत है। योगेश्वर श्रीकृष्ण के बारे में कहा गया है–'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' जहाँ पौराणिक विद्वान उन्हें भगवान मानते हैं वहीं दर्शन धर्मी उन्हें योगेश्वर भगवान मानते हैं। उनके उज्ज्वल चरित्र से अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारना ही उनकी वास्तविक पूजा मानते हैं। योगेश्वर भगवान का जीवन अद्भुत गुणों का सागर है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को उत्साहपूर्वक कर्त्तव्य पालन करने के लिए तरह–तरह के उदाहरणों से तत्वज्ञान कराते हुए धर्मानुसार एवं कर्त्तव्यानुसार योगस्थ होकर कर्म करने का उपदेश देते हुए कहते हैं–

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्ंग त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।[1]

अर्थात् हे अर्जुन आसक्ति का त्याग करके युद्ध में विजयी होने की मुद्रा में योगस्थ होकर एवं सिद्धि और असिद्धि (जीत और हार) में समान बुद्धि वाला होकर कर्त्तव्य कर्मों को कर। श्रीकृष्ण सदाचार की मूर्ति थे वे मन की पवित्रता के पोषक थे, उन्होंने गीता के 16/2 में नरक (दुखों) के तीन दरवाजे बताये हैं– काम, क्रोध ओर लोभ इन तीनों को छोड़ देने को कहा है, वे धर्म और न्याय के पक्षधर थे दृष्टान्ततः।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।[1]

अर्थात् हे भारत (अर्जुन) जब–जब धर्म की ग्लानि (हानि) और अधर्म का उत्थान होता है तब–तब मैं ही धर्म की स्थापना के लिए अपना सृजन करता हूँ। साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

श्रीमद्भागवत की प्रसिद्धि और व्यास जी की संतुष्टि के पीछे उनका नवम् एवं दशम् स्कन्ध इनमें श्रीकृष्ण चरित का आद्योपान्त वर्णन है, जो सरस मनोहारी तो है ही साथ ही विशिष्ट विशेषता यह है कि प्रत्येक राक्षस के वधोपरांत श्रीकृष्ण का अभिषेक कराया जाता है। जो स्तुतियों के रूप में है यही स्तुतियाँ ही महर्षि व्यासजी की आत्म संतुष्टि का कारण बनी।

श्रीमद्भागवत के पश्चात महर्षि व्यासजी द्वारा प्रणीत महाभारत में भी श्रीकृष्ण का चरित्र नायक के रूप में देखने को मिलता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण के बिना पाण्डवों का महाभारत के युद्ध में विजयश्री असम्भव था।

अस्तु योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान ने स्वयं कहा है कि जहां धर्म है वहीं मैं हूँ और जहां मैं हूँ वहीं विजयश्री है। महाभारत के ही विषय में कहा गया है–

''यदिहास्ति तत्सर्वत्र यन्नेहास्ति न तत क्वचित्''

अर्थात् समस्त जगत में जो कुछ भी दृष्यमय है वह सब कुछ महाभारत में विद्यमान है जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है। महाभारत में ही भीष्म पर्व के पच्चीसवें अध्याय में वैशम्पायन–जनमेजय संवाद के अंतर्गत संजय–धृतराष्ट्र संवाद आता है। इसके पश्चात इसी अध्याय के 28वें श्लोक से योगेश्वर श्रीकृष्ण–अर्जुन संवाद प्रारम्भ होता है। श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद विषय रूप में पल्लवित–पुष्पित एवं फलित होकर 42वें श्लोक तक व्याप्त है। श्रीकृष्ण के महत्व को प्रतिपादित एवं प्रतिष्ठित करने वाली श्रीमद्भगवत गीता के विषय में का गया है–

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता।।[2]

अर्थात् गीता को भली–भाँति अर्थ और भाव सहित अन्तःकरण में धारण कर लेना ही मुख्य कर्त्तव्य है, क्योंकि यह पद्मनाभ भगवान श्री हर के मुखार बिन्दु से निकली हुई है। अन्य शास्त्रों के विस्तार से कोई प्रयोजन नहीं है स्वयं भगवान ने इसमें सभी प्रकार के महात्म्य का वर्णन किया है।

संस्कृत वाङ्मय में श्रीकृष्ण पर प्रकाश डालने वाले प्रमुख कवियों में महर्षि व्यास एवं महाकवि माघ हैं, इनके पश्चात् संस्कृत में गीत शैली में लिखने वाले तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ जयदेव एवं उनकी रचना गीतगोविन्दम् को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। षोडष कलाओं से युक्त योगेश्वर श्रीकृष्ण का चरित्र स्मरणीय, वन्दनीय, अभिनन्दनीय, स्तुत्य एवं मंगलप्रद है।

श्रीकृष्ण योगेश्वर हैं और गीता योग है। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म और मरण कभी नहीं होता वे अपनी योग माया से नाना प्रकार के रूप धारण करके लोगों के सम्मुख प्रकट होते हैं। भगवान की यह योगमाया उनकी अत्यंत प्रभावशाली ऐश्वर्यमयी शक्ति है। भगवान का अवतार जीवों के जन्म की भांति नहीं होता है, वे अपने–अपने भक्तों पर अनुग्रह करके उन्हें अपने शरणत्व को प्राप्त कराते हुए अनेक दिव्यलीला करने के लिए अपनी योगमाया से अवतार लेते हैं। जिस समय मनुष्य भगवान के जन्म कर्मों की दिव्यता को समझ लेता है उसी समय से वह आसक्ति, अभिमान, अहंकार और समस्त कामनाओं रागद्वेषादि समस्त दुर्गुणों का त्याग करके सम्भाव, अनन्यभाव और निष्कामभाव से भगवान् की भक्ति में लीन हो जाता है, तदुपरांत मरने के बाद उसका पुनर्जन्म नहीं होता वह भगवान के परमधाम प्राप्त हो जाता है। योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है–

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुर्नजन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।।[3]
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ता पदं गच्छन्त्यनामयम्।।[4]

अर्थात् हे अर्जुन मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल एवं अलौकिक है इस प्रकार जो मनुष्य इस तत्व को जान लेता है वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को प्राप्त नहीं होता किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है। कर्म से उत्पन्न होने वाले फल को त्यागकर बुद्धियुक्त मनीषियों की तरह परमधाम (अनामयं पदम्) को प्राप्त कर अर्थात् हे अर्जुन धर्म एवं कर्त्तव्य का पालन करते हुए कर्म कर ऐसा करने पर ही तुझको विषय के उपरांत शत्रुविहीन, समृद्धशाली राज्य की प्राप्ति होगी और पराजय की स्थिति में परमधाम (मोक्ष) की प्राप्ति होगी यही तुम्हारे लिए कल्याणकारी है।

''इदं शरीरं तु कौन्तेय क्षेत्रामित्यभिधीयते''।

प्रस्तुत छन्द में क्षेत्र शब्द पारिभाषिक है अर्थात् हे अर्जुन यह शरीर ही क्षेत्र कहा जाता है। इसी प्रकार धर्म शब्द भी पारिभाषिक है इसका अर्थ जीव और परमात्मा का योग है। श्रीमद्भगवत गीता के समग्र 18 अध्यायों में से एकादश अध्याय में योग शब्द का अर्थ आत्मा और परमात्मा का सङ्ंगम् है अस्तु गीता योग है और भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर हैं। अतः गीता ही यथार्थ जीवन का दर्शन है एवं कल्याणकारी है।

संदर्भ स्रोतः

[1].श्रीमद्भागवत गीता 2/48

[2].महाभारत 4/7

[3].श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4, श्लोक 9

[4].श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2, श्लोक 51